छुटकी उल्ली!

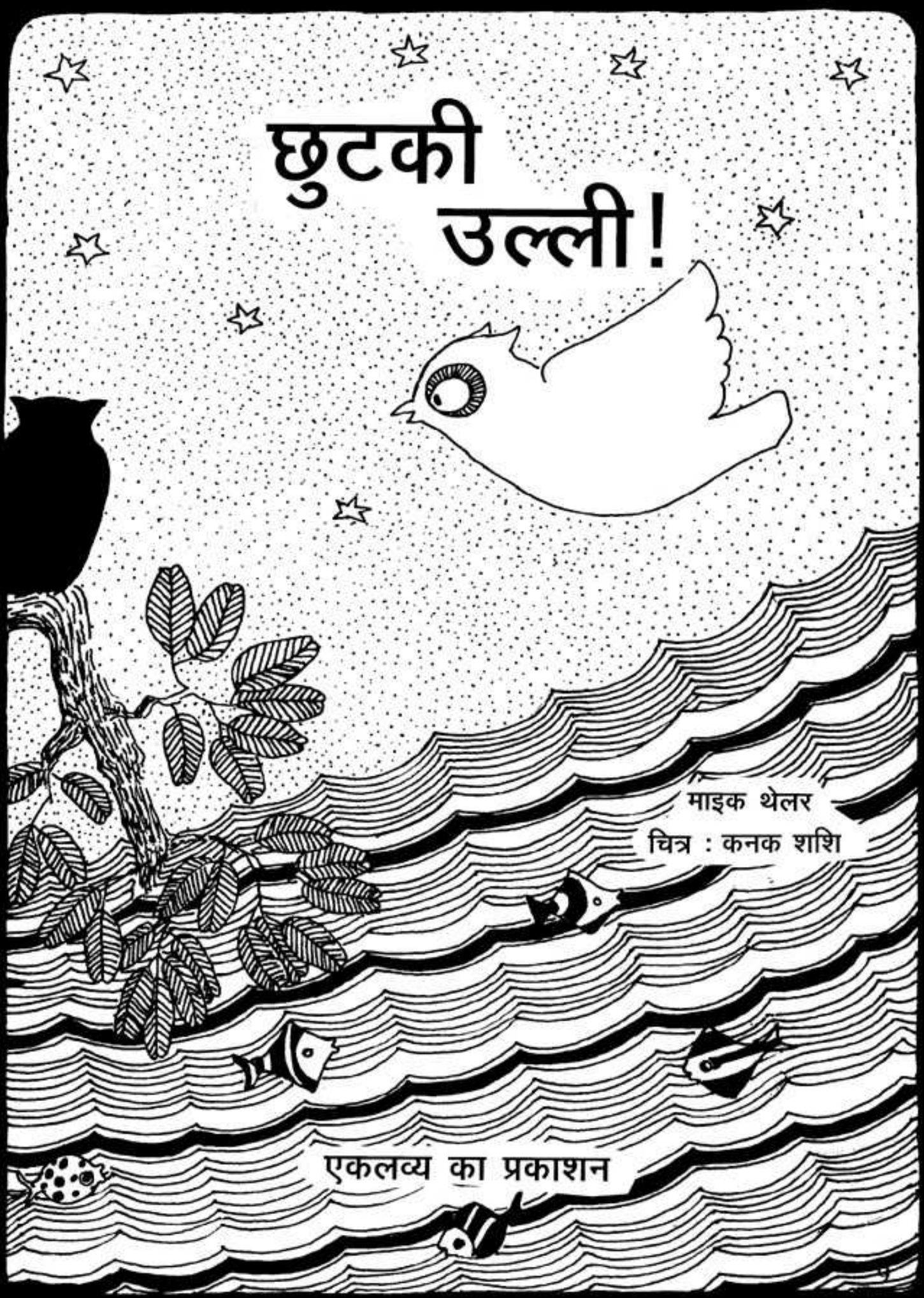

माइक थेलर
चित्र : कनक शशि

एकलव्य का प्रकाशन

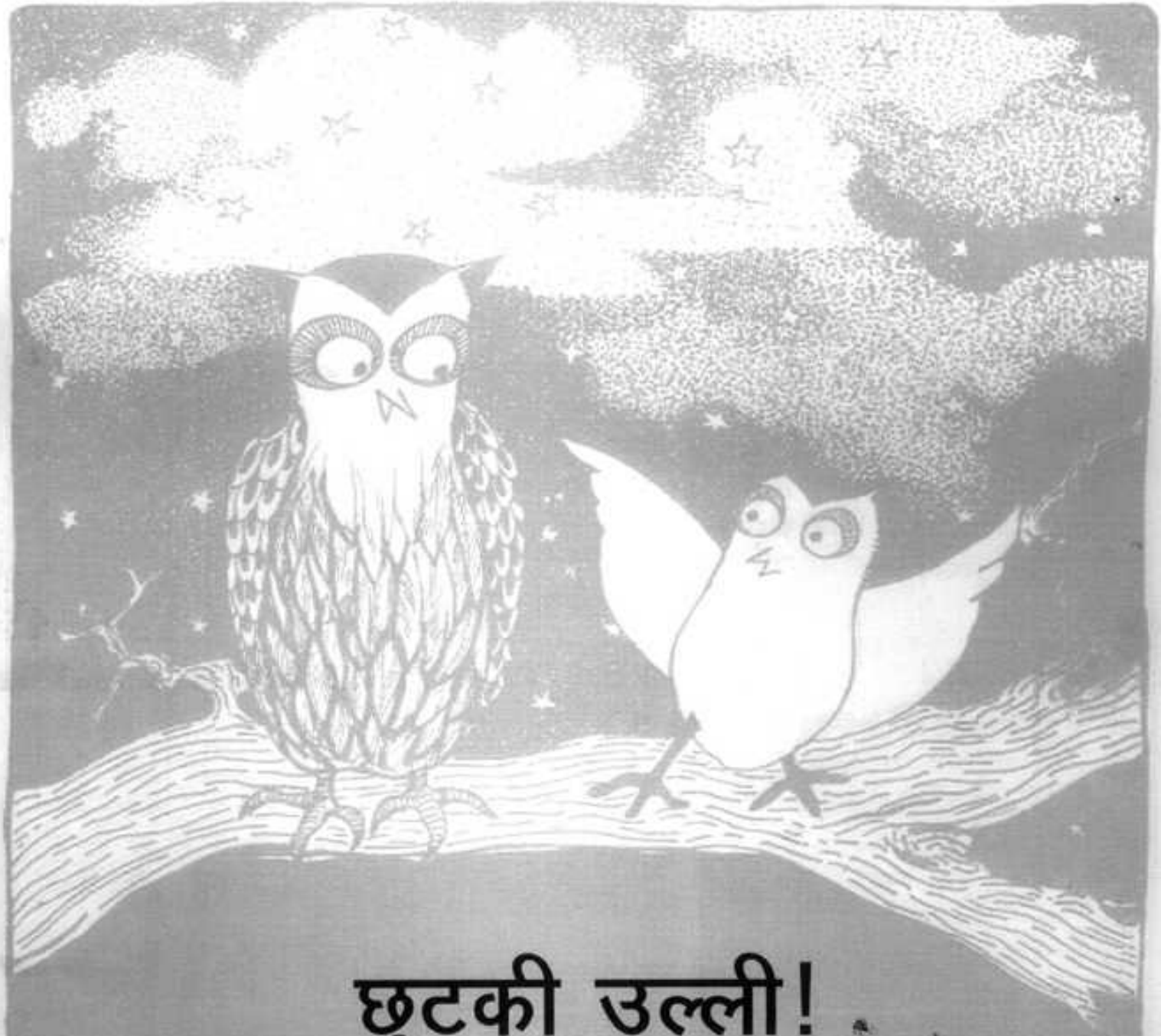

छुटकी उल्ली!

माइक थेलर
अंग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर
चित्र : कनक शशि

एकलव्य का प्रकाशन

छुटकी उल्ली!

एक चित्रकथा

कहानी : माइक थेलर
अंग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर
चित्र : विप्लव शशि

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
जनवरी 2006 / 5000 प्रतियाँ
90gsm मेपलिथो व 130gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित
ISBN 81-87171-66-9

प्रकाशक : **एकलव्य**
ई-7 / 453 एच आई जी, अरेरा कॉलोनी
भोपाल 462 016 (म. प्र.)
फोन (0755) 246 3380, 246 4824
फैक्स (0755) 246 1703
ई-मेल eklavyamp@mantrafreenet.com

मुद्रक : भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन (0755) 246 3769

जब छुटकी उल्ली दो साल की हुई, तो उसने सवाल पूछना शुरू किया।

"आसमान में कितने सितारे हैं?" एक रात उसने अम्मी से पूछा।

"बहुत से," अम्मी ने जवाब दिया।

"कितने?" छुटकी उल्ली ने आसमान की ओर देखते हुए पूछा।

अम्मी मुस्कराने लगी, "तुम गिनकर देख लो।"

"एक, दो, तीन, चार..."

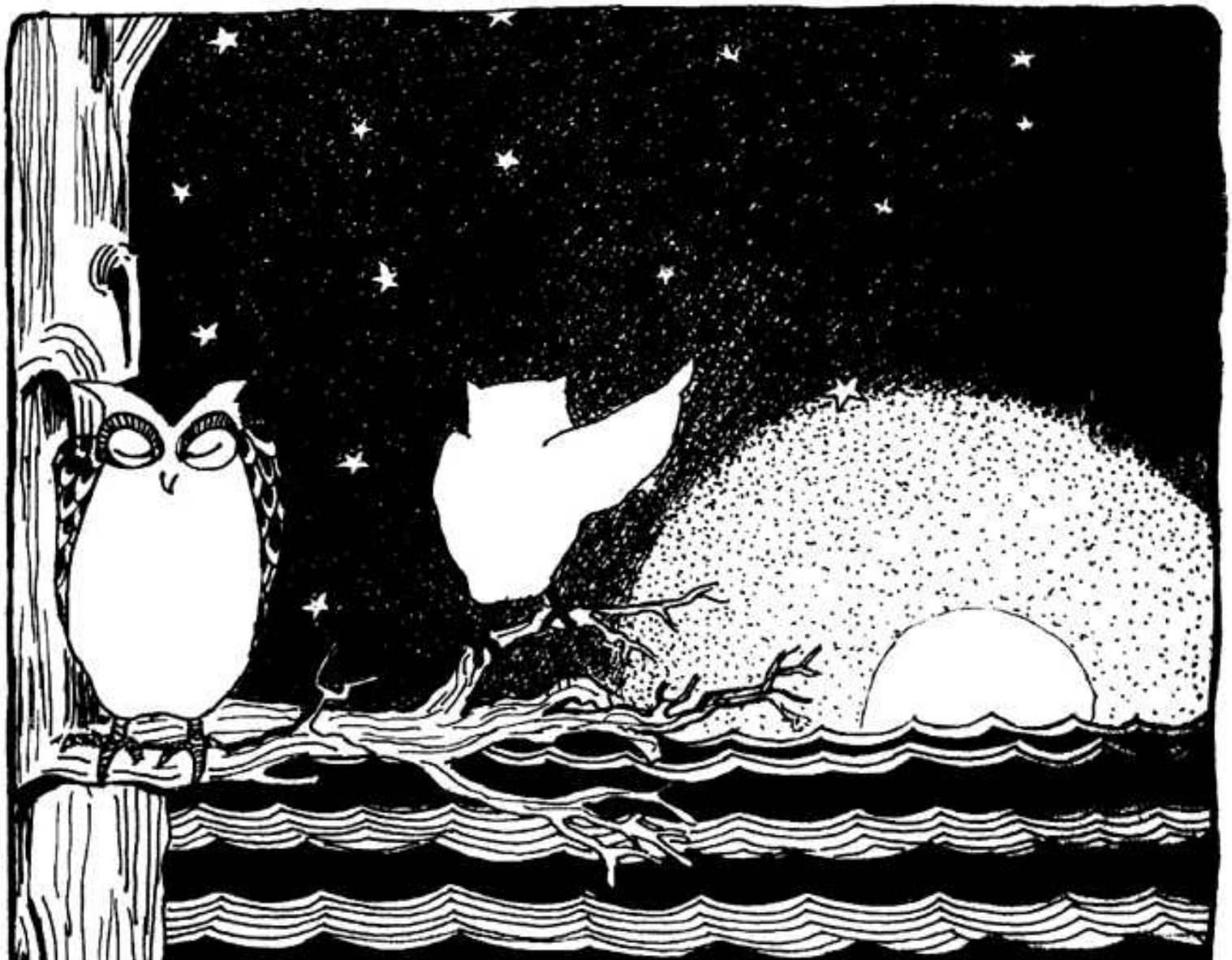

"एक सौ एक,
एक सौ दो,
एक सौ तीन,
एक सौ चार...."

जब सूरज निकला
छुटकी तब भी गिन रही थी।

"एक हज़ार एक,
एक हज़ार दो...."

"कितने सितारे हैं आसमान में?" अम्मी ने पूछा।

"इतने कि मैं गिन भी नहीं सकती," छुटकी ने पलकें झपकाते हुए कहा।

फिर अपना सिर अपने पंखों में छिपाकर झट-से सो गई।

अगली रात छुटकी ने फिर आसमान की ओर देखा।

"अम्मी, आसमान ऊँचा कित्ता है?"

"बहु SSS त ऊँचा," अम्मी बोली।

"कितना ऊँचा?" छुटकी उल्ली ने फिर पूछा।

"जाकर खुद ही देख लो," अम्मी ने कहा।

तो छुटकी ऊपर आसमान की ओर उड़ चली। अपने पेड़ से बहुत ऊपर। बादलों तक जा पहुँची।

उसने अपने पंख ज़ोर से फड़फड़ाए। अब वह बादलों से भी ऊपर उड़ रही थी।

लेकिन वह जितना ऊपर जाती आसमान और ऊपर उठता चला जाता।

सुबह जब वह अपने पेड़ पर उतरी तो बहुत थक चुकी थी।

"तो कितना ऊँचा है आसमान?" अम्मी ने पूछा।

"इतना ऊँचा कि मैं उड़कर वहाँ पहुँच ही नहीं सकती," उल्ली ने जवाब दिया।

फिर उसने अपनी आँखें बन्द कीं और सो गई।

अगली रात छुटकी ने
समुद्र में लहरों की आवाज़ सुनी।
"समुद्र में कितनी लहरें हैं?" उसने अम्मी से पूछा।
"बहुत-सी," अम्मी बोली।
"कितनी?"
"जाओ जाकर गिन लो," अम्मी ने जवाब दिया।

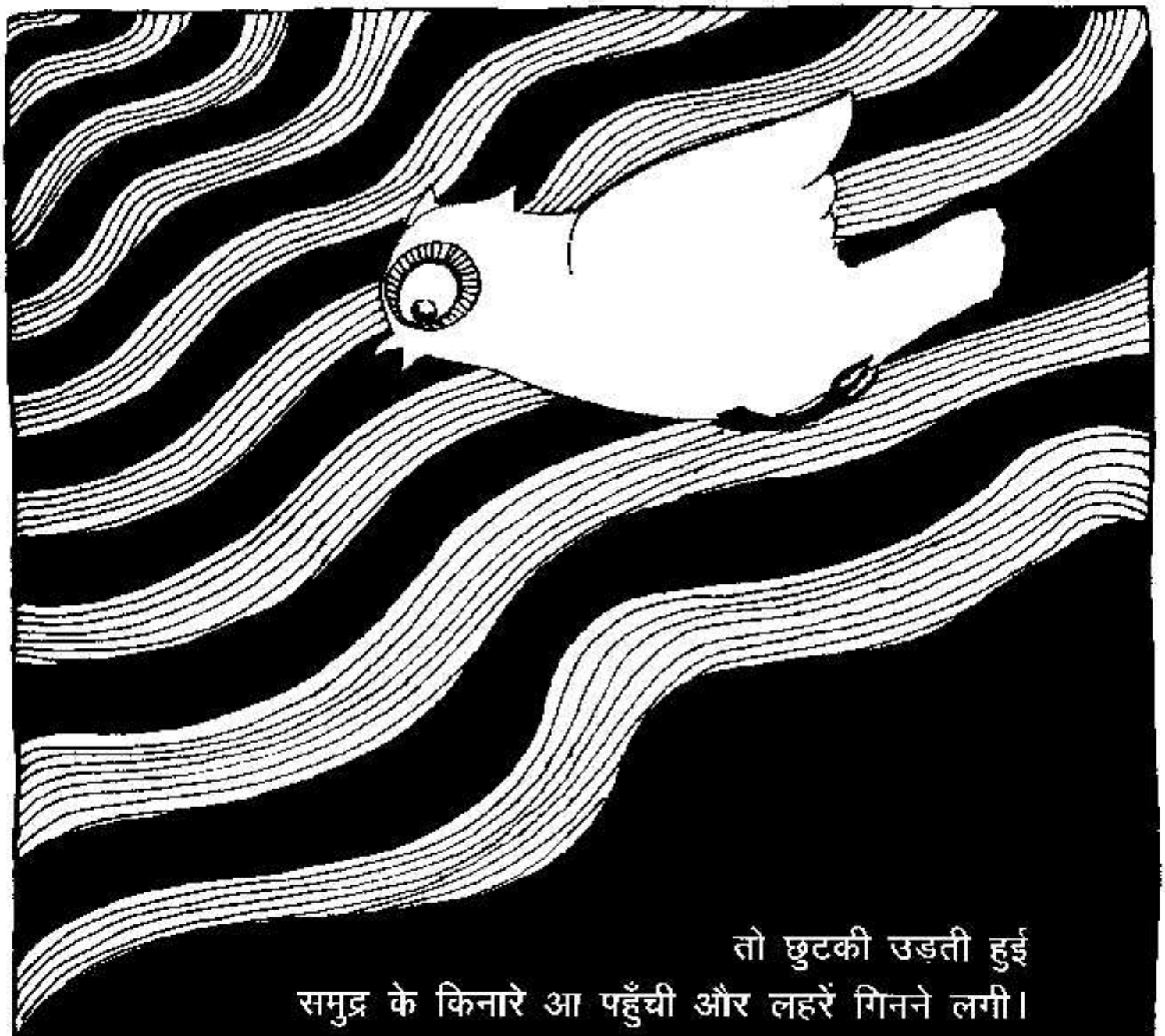

तो छुटकी उड़ती हुई
समुद्र के किनारे आ पहुँची और लहरें गिनने लगी।

"एक, दो, तीन, चार....."

पर वह जितनी लहरें गिनती,
और-और लहरें किनारे से टकराने लगतीं।

"एक हज़ार एक, एक हज़ार दो...."

और जब सूरज निकला,
उसने देखा कि समुद्र अब भी लहरों से भरा हुआ था।

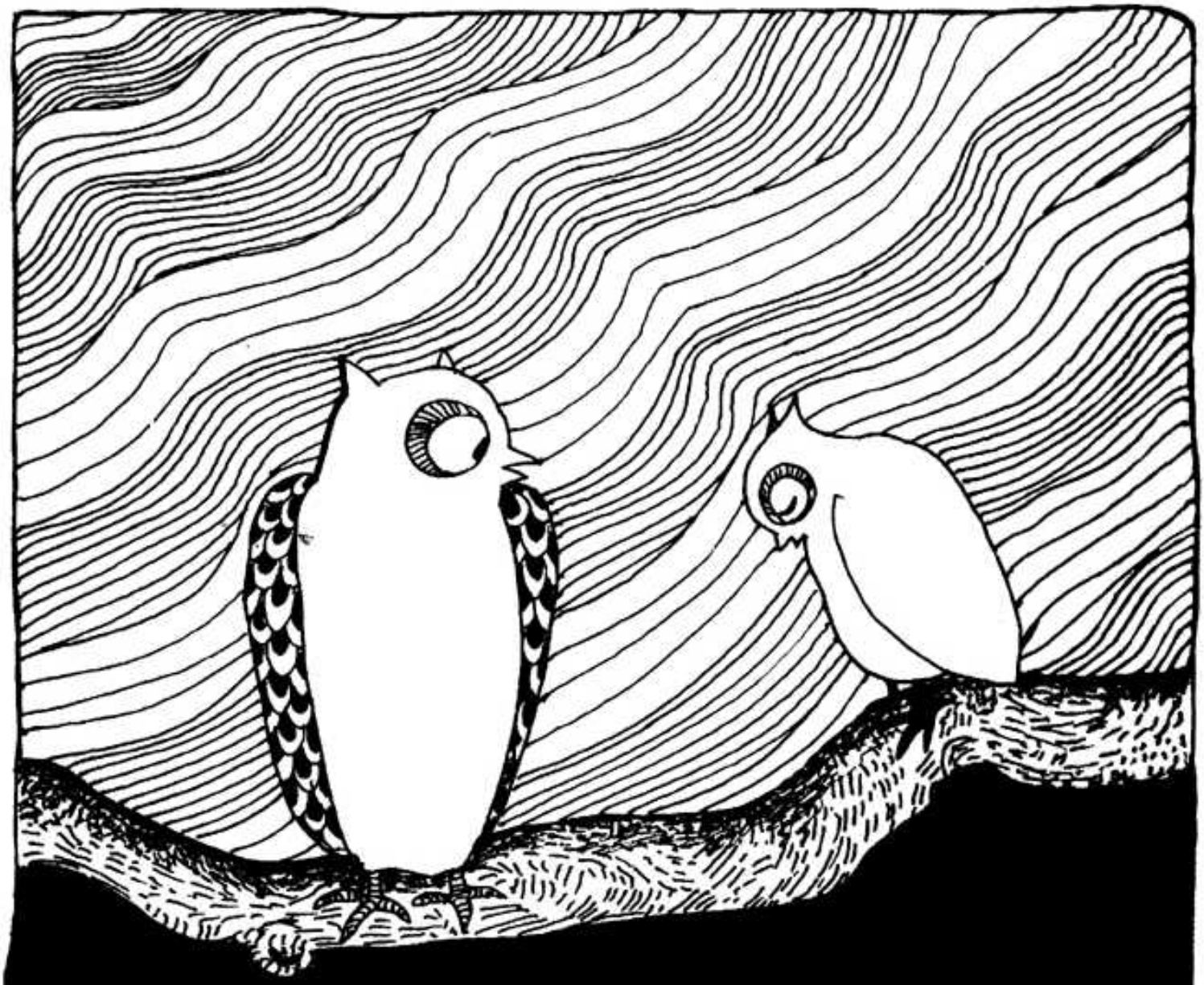

उसे ज़ोरों की नींद आ रही थी। वह अम्मी के पास लौट आई।

"तो कितनी लहरें हैं समुद्र में?" अम्मी ने पूछा।

"इतनी सारी कि मैं गिन ही नहीं सकती," छुटकी आँखें मींचते हुए बोली।

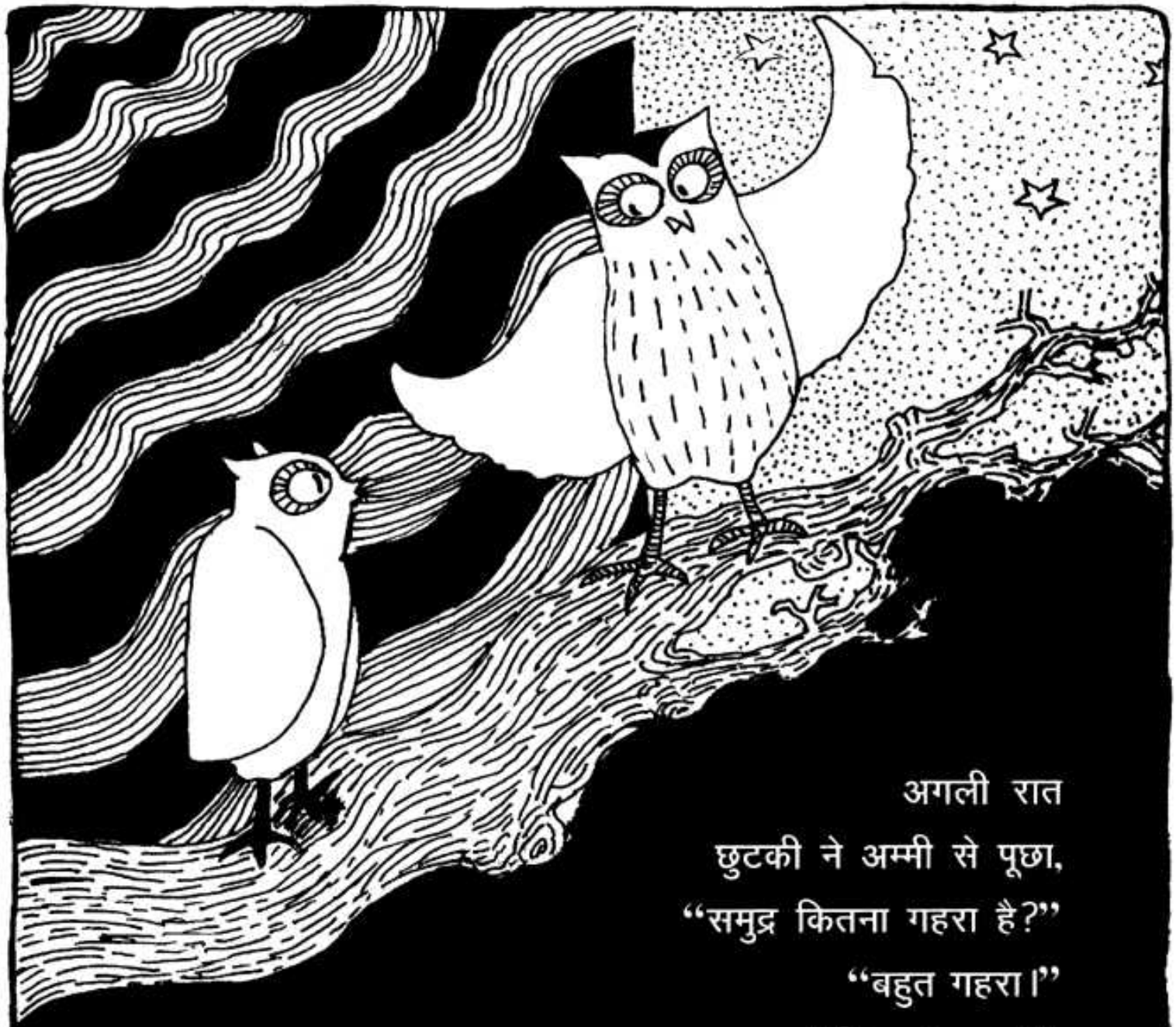

अगली रात
छुटकी ने अम्मी से पूछा,
"समुद्र कितना गहरा है?"
"बहुत गहरा।"
"कितना गहरा?"
अम्मी आसमान की ओर देखते हुए बोली,
"लगभग उतना ही गहरा जितना ऊँचा आसमान है।"

छुटकी सारी रात आसमान और सितारों के बारे में सोचती रही, समुद्र और लहरों के बारे में सोचती रही। जो भी उसने अम्मी से सीखा था, उसके बारे में सोचती रही।

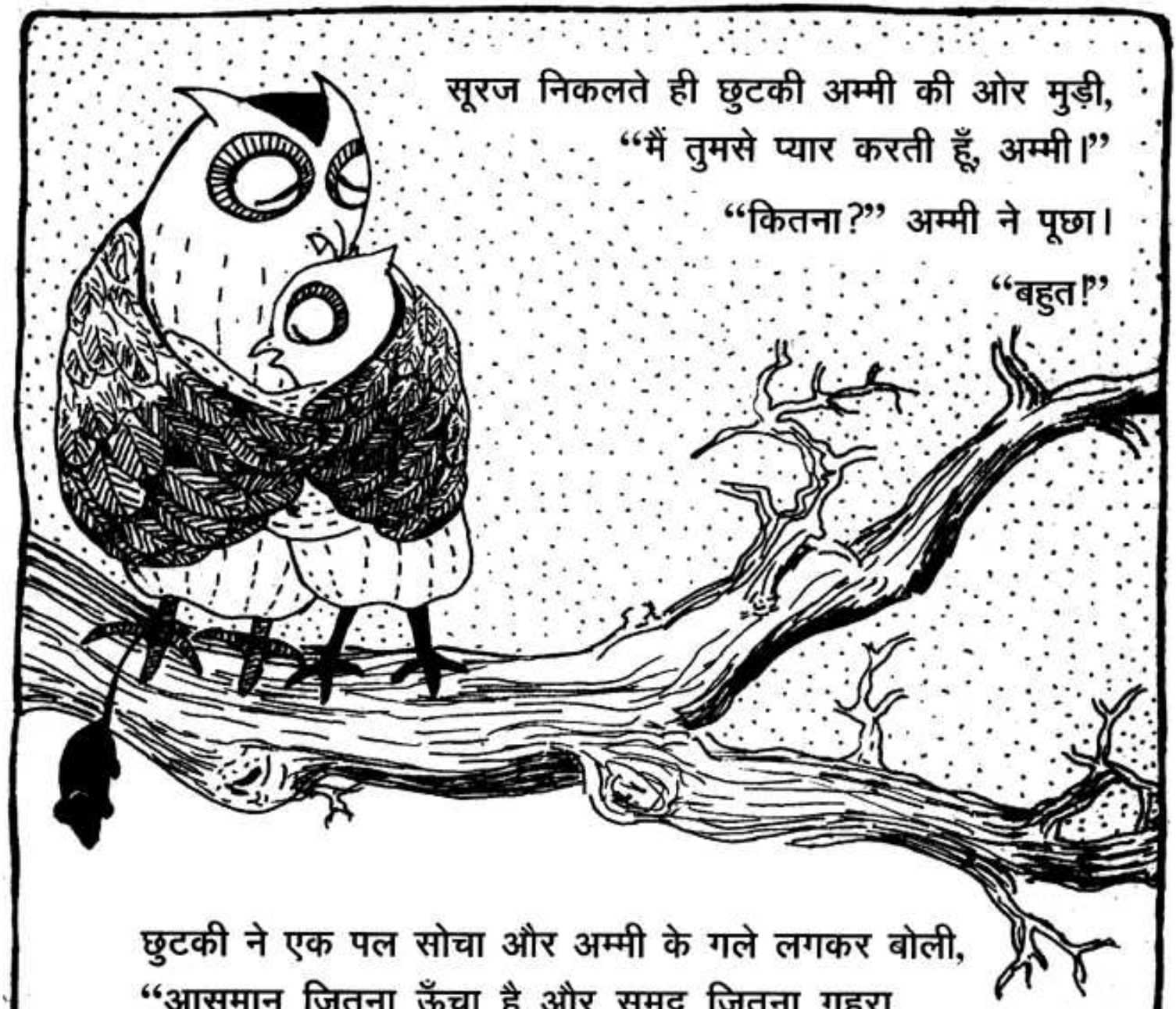

सूरज निकलते ही छुटकी अम्मी की ओर मुड़ी,
"मैं तुमसे प्यार करती हूँ, अम्मी।"
"कितना?" अम्मी ने पूछा।
"बहुत!"

छुटकी ने एक पल सोचा और अम्मी के गले लगकर बोली,
"आसमान जितना ऊँचा है और समुद्र जितना गहरा,
मैं तुमसे उतना प्यार करती हूँ।"

अम्मी ने अपने पंखों से छुटकी को ढाँप लिया।

"तुम कितनी बार गले लगाओगी मुझे?" उल्ली ने पूछा।

"बहुत बार!" अम्मी ने उसे फिर गले से लगा लिया।

"कितनी बार?"

"जितनी लहरें हैं समुद्र में, जितने तारे हैं आसमान में...।"

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं - मासिक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक*, विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर *स्रोत* तथा शैक्षिक पत्रिका *संदर्भ*। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

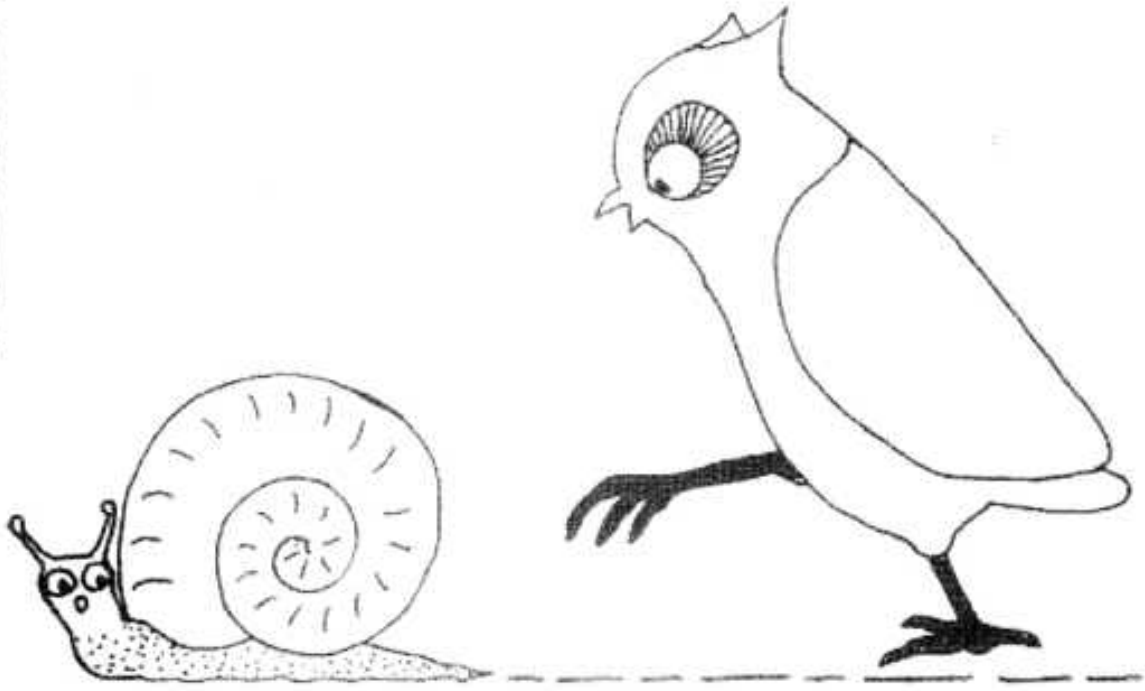

चित्रकथाओं के पक्ष में...

3 से 7 साल की उम्र के बच्चों की सबसे अच्छी कहानियाँ वे होती हैं जिनमें कुछ सीमित संदर्भों के इर्द-गिर्द कहानी बुनी गई हो। और इन्हीं बच्चों के लिए तैयार चित्र-कथाएँ ऐसी हों जिनमें नई-नई परिस्थितियों और सवालों को टटोलते हुए कुछ गिने-चुने पात्र हों। कुछ बातें कहानी में दोहराई जाएँ जबकि कुछ नएपन के साथ आगे खुलती चली जाएँ। लिखित भाषा कम-से-कम हो, परिचित हो। चित्रों की भरमार तो हो ही, उनकी बारीकी पर भी ध्यान दिया गया हो ताकि वे कहानी को समृद्ध बनाएँ और पढ़ने वाले बच्चों की नज़रों और मन के रुकने के लिए ठौर भी उपलब्ध कराएँ। नया-नया पढ़ना सीखे बच्चों की बढ़िया दोस्त हैं चित्रकथाएँ!

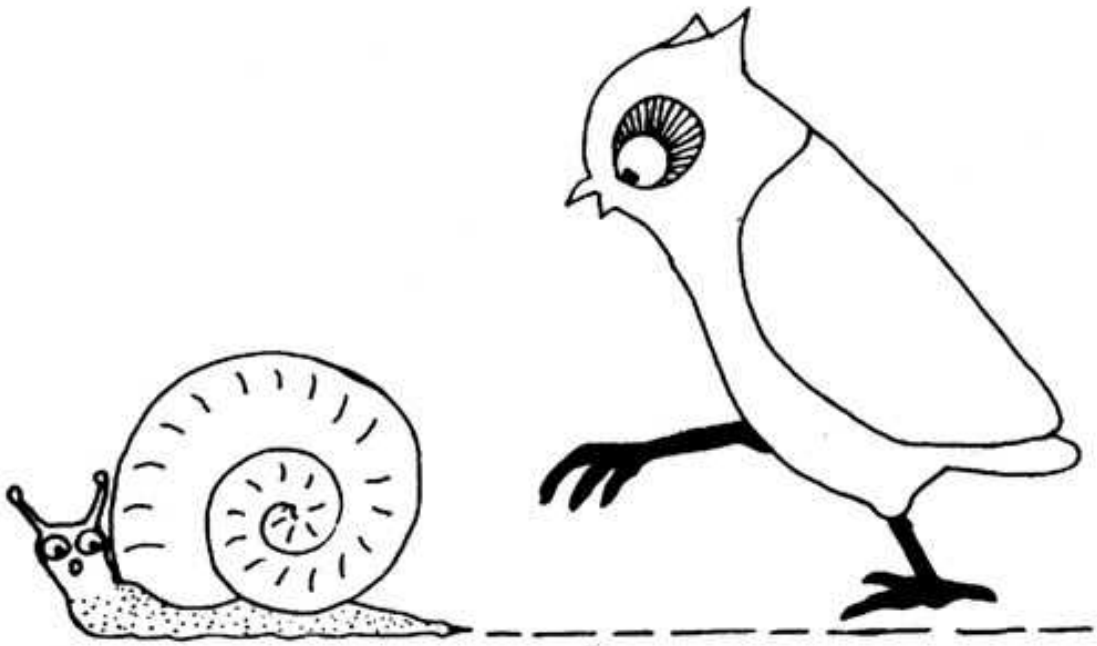

ISBN: 978-81-87171-66-9

एकलव्य

मूल्य: ₹ 15.00